Vol II Issue XII Jan 2013
Impact Factor : 0.2105
ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2230-7850

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.12,Jan. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

महाकवि निराला की कविताओं में प्रगतिशील चेतना

एल.पी.लमाणी

हिंन्दी विभाग़
कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड

सारांश

हारकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी अपनी कविताओं से नया स्वाद देनेवाले एक ऐसे कवि है जो एक ओर कबीर की परंपरा से जुडते हैं तो दूसरी ओर समकालीन कवियों की प्रेरणा स्त्रोत भी रहे है | उनका यह विस्तृत काव्य संसार अपने भीतर संघर्ष और जीवऩ क्रांति और निर्माण़ ओज और माधुर्य़ आशा और निराशा के द्वंद्व को कुछ उस तरह समेटे हुए है कि वह किसी सीमा में बंध नहीं पाता | निराला न तो छायावादी थे न रहस्यवादी न प्रयोगवादी न प्रगतिवादी वह निर्बन्ध थे ऐसे जो विशिष्ट विचारधारा से युक्त कवि है वही निराला हो सकते है | जब यह 'मतवाला' के संपादक थे तब वह निराला बने थे | वह मस्ती उनके अपने व्यक्तित्व की मस्ती है जो कि सबसे पास नहीं होती है इसीलिए वह निराला थे और ऐसा आदमी कभी रूढियों से बॅधा होकर पास नहीं चलता | परन्तु परंपरा की तेजस्विता उनमें पूरी तरह रह सकती है और फिर वह प्रगति के अधिकाधिक स्वागत कर सकते हैं |

प्रस्तावना

आधुनिक युग के नये कवियों महाप्राण निराला सदा निराले रहें हैं | उनके अपने ही शब्दों में - 'देखते नही मेरे पास एक कवि की वाणी कलाकार के हाथ पहलवान की छती और फिलासफर (दर्शनिका) केपै र है |[1] ' क्यों कि उनकी कवित्व की जड़ बहुत मजबूत थी | इसलिए यहॉ पर मैं कह सकता हूॅ कि 'परिमल' कोई सूॅघ लेता 'अनमिका' के इंगित कोई समझ लेता तो आगे कुछ कहेने की जरूरत ही नहीं पडती | मालूम होता है कि निराला जी ने अपनी 'परमिल' के तीन खंड तो कर दिए है लेकिन तीन खंड कैसे अखंड हैं ऋ एक ही कवि वेदों से लेकर अतीत के गान गार्तेगाते शिवाजी के पुत्र की बात भी करता है तथा 'बादल राग़ 'पंचवटी' 'कण' 'रास्ते के फुल' के प्रति भी लिखता हैं एक ही 'परमिल' में है ये सब चीजें | विधवा भी है भिक्षुक भी है और दीन भी है | अब कैसे कहेंगे कि प्रगतिशील चेतना कहॉ से शुरू होती है ऋ प्रगतिशील चेतना यहॉ पर संपूर्ण रूप से विद्यामान है |

महाप्राण निराला के संदर्भ में बात करते हुए यह कहना मुझे बहुत जरूरी लगता है उनमें प्रगतिशील चेतना सन्**4041** के बाद शुरू हुई हैं |

“नश्वर है दीन भाव कायरता
कायरता है दीण भाव नश्वरता
पर्दरज भी नहीं है यह विश्व का भार
में बत्मा हूं |”[2]
वाकई वह शक्ति देते है |

लेकिन यह सारी ऊर्जा यह सारी तेजस्विता यह सारी ओजस्विता अंदर जो है वह ब्रत्मा से प्राप्त है | जिसके कारण वे कहतें हैं कि छन्दों की युक्ति मुीक्त मान की किसमें है ? कर्मो के बंधन में आदमी की मुक्ति हैं तो छन्दों की मुक्ति मुक्त होने में हैं | यह समकालीन स्वाधीनता संग्राम है | 'मुीक्त' की बातें आई हैं उस शैली से भी हम जान सकते हैं कि निराला क्या थे |

“नव पर नव स्वर दे
नवल गति लय ताल छन्द नव
यह योंही नहीं आ रहा है -
नर्वनव के नव वेदवृंद को

नव पर नव स्वर दे वीणावादिनी वर दे |
अमृत मंत्र नव प्रिय स्वतंत्र रव भारत में भर दे |"[3]

इस प्रकार उस समय भारत में जो स्वाधीनता संग्राम था निराला उसके साथ बँधे हुए थे | निराला का मुक्त छन्द जो छन्दहीन ही जिस में अपना ताल और लय बराबर है वह सब कुछ जुडा हुआ है और उससे आगे निराल बढते है तो प्रगतिशील चेतना निराला में है जिसे समझना बहुत जरूरी है कि वह प्रगति भीतर से आई और तभी जब राष्ट्र के साथ एकमेक होते हैं | 'राम की शक्ति पूजा' में वाकई वह दूर्गा कौन सी है ऋ जब दुर्गा वह शक्ति तो अर्जित करनी है और राम हमारे संस्कारों में बैटे हुए राम हैं | वह राम हमारे वाल्मीकि के राम तुल्सीदास के राम हैं और मानना है कि प्रत्येक युग में राम नया जन्म लेता है क्योंकि हर युग के लिए अपना नया अंदेश देना होता है कवि की दृष्टि बदल जाती है | कवि के बारें में यह कहना उचित है कि जो अपने दुःख से मुख मोडकर दूसरों को सुख देता है वही कवि है यह कवि की परिभाषा है | 'जोवोमय देते हो जीवन जो' यह महाप्राण निराल कवि को स्वयं कहते थे |

'मोड निज सुख से मुख' तो राम ने क्या किया ऋ बलिदान त्याग सब स्वीकार किया | त्यागपूर्ण जो शक्ति है उसकी कमी है आज उस संगठित शक्ति की कमी है वही शक्ति की पूजा है | पूजा शब्द ऐसे ही नहीं आया | इस पूजा शब्द में कौन से और कितने संस्कार हैं हमें कहने की जरूरत नहीं है | यह जो 'राम की शक्ति पूजा' है यह शक्ति उस शक्ति को प्राप्त किये बिना स्वाधीनता भी कैसे प्राप्त करें ? स्वाधीनता ऐसे हीं प्राप्त नहीं की जा सकती | हिन्दी साहित्य में प्रगतिशीलता पर विचार करते हुए हम कबीर तुलसी के साथ आम तौर पर एकदम बढते हैं भारतेंदु पर उसके बाद प्रेमचंद पर और प्रेमचंद के बाद एकदम निराला |

महाप्राण निरालाजी ने 'रामचरितमानस' को खर्डिबोली में अनुवाद कर रहे थे तो रावण को क्या मानते हैं |

"दारिद दसावन दबाई दुली दनिबन्धु
दुरिद दहन देख तुलसी हाँहा कारी |"[4]

दरिद्रता रूपी रावण की बात है तो निराला प्रगतिशील क्यों नहीं हो सकते ?
"नीचा अंदरि नीच जाति नीचा हि जाति नीच
नानक तिनके संग साथ वड्या क्या रीच |"[5]

संतो में भी वह परंपरा है तुलसीदास में भी वह परंपरा है जो निराला में भी है और छायावादियों में नहीं आई | अब हम देखते हैं कि तब सारा भारतवर्ष दिन था ऽ इसलिए बात बडी साफ है और उनको समझना चाहिए कि 'जागो फिर एक बार' तभी हो सकता है अतःप्रगति चेतना कभी समाप्त नहीं हुई | लेकिन वह समाप्त न होने के बाद अंतिम कृतियाँ कौन सी हैं ? 'परिमल' 'अनामिका' और उसके बाद 'तुलसीदास' 'गीतिका' 'राम की शक्तिपूजा' के पहले आ जाती है और उसके बाद 'नये पत्ते' 'अणिमा' 'बेला' और कुकुरमुत आते हैं | इनमें निस्संदेह उनकी प्रगतिशील चेतना सक्रिय हुई है |

महाप्राण निरालाजी की 'कुकुरमुत' को सबसे ज्यादा सशक्त रचना मानी जाती है और यह है भी ठीक | लेकिन यह 'कुकुरता' किसका प्रतिक है हमें सब स्पष्ट है कि कैपिटलिस्ट का प्रतिक है | वह किस प्रकार रक्तशोषी है स्वाद का शोषण करता है -

"अब सुन बे गुलाब
भूल मत गर पाई खुशबू रंगो आब
खुन चूसा स्वाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट
कितनों को तून बनाया है गुलाम
माली का कररखा सारा जाडा हराम |"[6]

इसी प्रकार उनकी पहली कविताएँ 'वह तोडती पत्थर' 'विधवा' 'कण' इन सब को मैने इल्लेख नहीं किया | एक उदाहरण मैं देता हूँ सिर्फ 'बादल राग' का निराला तो वह बादल राग थे जिसके अंदर सघन करूणा है लेकिन सघन करूणा के सार्थसाथ बिजली भी है | चाहे तो वह तूफान भी ला सकता है और चाहे तो वह किनारों को गिरा भी सकता है समाप्त भी कर सकता है चाहे तो हरीतिमा भी प्रधान कर सकता है |

"खिलंखिल खिलंखिल मुझे बुलाते
विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते
और
जीर्ण बाहु है क्षीण शरीर

वह तुम्हें बुलाता कृपक अधीर
और
अंगना से लिपटे
धनी अंतक अंक पर कॉप रहे |"[7]

ये सारी बातें उन्होंने कर दी | ये जो धनी हैं अंगना अंग से लिपटे हुए कामुक होकर के भी अंतक अंक पर कॉप रहे | ये सारी बातें विप्लव का प्लावन आनन आनन में कानन में जो एक प्रकार से कठोर धारा अटूट पर छूट पडने का गुमान जो उनमें मिलता हैं | यह बहुत पहले से है | 'नये पत्ते' और 'वेला' में भी नएंनए संदर्भ लेकर के उन्होंने यह सारी बातें कहीं है | 'एक देश दूसरे देश को शोषण कैसे करता है अंग्रज हमारा शोषण कैसे कर रहें हैं ये साम्राज्यवादी है इनको निकालो" सीधी सीधी बातें भी उनके विरूध्द कहीं है ये सारी बातें निराला में मिलाती है |

निष्कर्ष :

निराला में प्रगतिशील चेतना तो हमेशा ररही है | हॉं अम्त में 'आराधना' 'अर्चना' 'गीत गूंज' को नहीं भूलना चाहिए क्यों कि निराला हमेशा प्रार्थनारथ रहे हैं | महाप्राण निराला की आद्यात्मिलता हमेशा संम्पन्न रही है प्रार्थनापरक गति वह हमेशा अंत तक लिखते रहे हैं इसको भी नहीं भूलना चाहिए | इसलिए एक बात मुझे साफ कहनी है और उसको समझलेना चाहिए कि जब वे कुकुरमुत्ता लिखते है तो उसमें बहुत लोग यह मानते है कि यहॉं पर उस काल की पूँजीशाही पूँजीवादी ढॉंचा है उस पर करारी चोट है वहॉं ये मजदूरों पीडितों शोषित अपमानित जितने भी है उनको सक्रिय सहानुभूति देते है उनको उभारते है वहॉं ये उन पर भी चोट करने वालों पर भी चोट करते हैं | यानी जो बडी अदाओं से चोट करते हैं व्यंग्य करते है लेकिन स्वयं भी उससे उभर नहीं पाते स्वयं भी वैसा ही जीवन जीती रहते है उस पर भी चोट है | इसलिए निराला अक्कड़ फक्कड आदमी थे | जैसे जीत थे वैसे ही रहते थे | मानव प्रेम ही उनके लिए सबसे बडा थाकरूणा वेदना संवेदना उनमें बहुत गहरी थी ऐसा आदमी जो होगा वह प्रगतिशील चेतना की हमेंशाहमेशा के लिए हमें स्पूर्ति देता रहेगा | ऐसा निराला को पाकर हम धान्य है और हमारा काव्य भी गौरवान्वित . . . . . !

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1 . निराला साहित्य - पृ . स . 63
2 . निराला साहित्य - पृ . स . 81
3 . महाकवि निराला - पृ . स . 120
4 . निराला साहित्य - पृ . स . 124
5 . गुलाब निराला साहित्य - पृ . स . 173
6 . विप्लव निराला साहित्य - पृ . स . 193

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net